मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

29 जुलाई 2026

वर्ष - 04, अंक - 13 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

अजीब हालात है नीमच जिले के...

हर मंगलवार को जनसुनवाई में बढ़ता लोगों का आक्रोश...

कोई आत्मदाह करने को तो कोई कीटनाशक पीने को हो रहे मजबूर

नीमच जिले के अजीब हालात हो चले है... शिकायतकर्ताओं की कोई सुनने वाला ही नही... जनसुनवाई भी महज मजाक बन कर रह गई है अब तो !

जी हां, भले ही सरकार कुछ भी दावे करें पर हकीकत तो यही है कि शिकायतकर्ताओं की कोई सुनने वाला ही नही है... ना तो जनप्रतिनिधि गंभीर है ना ही प्रशासन ! भले ही वर्ष 2004 से आज हर मंगलवार को मप्र के हर जिले के कलेक्टर कार्यालयों में जनसुनवाईयों को 22 साल हो चले हो, लेकिन स्थितियों में ज्यादा कुछ बदलाव देखने को नही मिल पाया है। कुछेक को छोड़ दे तो जनसुनवाई में ज्यादातर लोगों से बस आवेदन लेने भर की औपचारिकता होती दिखाई देती है... अधिकांश लोगों की समस्याएं जस की तस बनी हुई है !

ऐश्वर्य शर्मा (पवन)

शिकायतकर्ताओं को पहले छोटे स्तर पर चक्कर लगाने पड़ते है तो वहां सुनवाई नही होने पर फिर जनसुनवाई में भी चक्कर लगाना पड़ते ही है। ना तो उनकी जनप्रतिनिधियों द्वारा सुनी जाती है ना जनसुनवाई में... !

आज भी नीमच के कलेक्टर कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान दो शिकायतकर्ताओं ने न्याय नहीं मिलने पर अपने प्राण त्याग ने तक का गंभीर कदम उठाकर प्रशासन को कटघरे में खड़ा कर दिया है... ! एक तो चेनपुरा निवासी शंकर पिता नवल सिंह जो पिछले 2 आलों से करंट से अपनी गाय और भैंस की मौत का मुआवजा मांगने के लिए जनसुनवाई में चक्कर लगा रहा है, उसने कीटनाशक गटक लिया जिसे जिला अस्पताल भेजा गया दूसरा ही ऐसा मामला है रतनगढ़ का जहां चांदमल पिता नंदलाल चारण निवासी रतनगढ़ 11 जनसुनवाई में आने के बाद भी जनहित की शासकीय भूमियों से अतिक्रमण हटाने की शिकायत पर कोई कार्यवाही नहीं होने पर जिसने खुद के ऊपर तेल डालकर आत्मदाह करने का प्रयास किया...! यह दोनों ही मामले गंभीर है... संवेदनशील है...। जो इन जनसुनवाईयों कि पोल खोल रहे है ।

क्या जनप्रतिनिधियों का सबसे पहला यह दायित्व नही की उनकी जनता जनार्धन की पीड़ा का निवारण किया जाए...? क्या उन अधिकारियों का कोई दायित्व नही की आखिर जनसुनवाई में आने के बाद भी शिकायतकर्ता परेशान क्यों है...? उनकी समस्या का हल क्यों नही हो पा रहा है...?

क्यों निचले स्तर पर इतना निक्कमापना हो रहा है...? क्यों लोगों की सुनी ही नही जा रही है...?

आखिर ये जनसुनवाईयाँ किस लिए हो रही है? कौन करेगा इन शिकायतकर्ताओं की समस्या का निदान? शायद इसी लिए लोगों के मन मे इतना आक्रोश भर जाता है कि वो ऐसे कदम उठाने को मजबूर हो जाते है !

मंदसौर की बस कश्मीर में 50-फीट गहरी खाई में गिरी

श्रीनगर । जम्मू-कश्मीर के बालटाल से श्रीनगर जा रही मंदसौर की बस मंगलवार को 50 फीट गहरी खाई में गिर गई। हादसे में बस सवार सभी 40 श्रद्धालु घायल हो गए। वे अमरनाथ से लौट रहे थे। इनमें मध्य प्रदेश और राजस्थान के यात्री शामिल हैं। दो को गंभीर चोटें आई हैं। हादसा सुबह करीब 7 बजे गांदरबल जिले के रंगा मोड़ के पास हुआ। स्थानीय लोगों और राहत-बचाव दल ने सभी यात्रियों को बस से बाहर निकाला। घायलों को पहले उप जिला अस्पताल कंगन ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद सभी को सौरा, श्रीनगर रेफर किया गया। जानकारी के मुताबिक, ज्यादातर यात्रियों को मल्टीपल इंजरी और हेड ट्रॉमा है। दुर्घटनाग्रस्त बस नंबर AR11 D 5655 अजमेर की है। इसे मंदसौर जिले की मां भगवती यात्रा कंपनी के एजेंट ने अमरनाथ यात्रा के लिए हायर किया था। कंपनी की कुल चार बसें यात्रा पर गई थीं, जिनमें से मंदसौर से गई एक बस हादसे का शिकार हो गई। इसमें मंदसौर, मल्हारगढ़, नीमच जिले के सुवाखेड़ा और बड़नगर क्षेत्र के भी श्रद्धालु थे। मध्य प्रदेश के डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा ने स्थानीय अधिकारियों से घायलों की हालत पर चर्चा की है।

एमपीपीएससी का बड़ा फैसला...

लाखों अभ्यर्थी अब देख सकेंगे राज्य सेवा मुख्य परीक्षा की उत्तरपुस्तिकाएं

इंदौर । लंबे समय से राज्य सेवा मुख्य परीक्षा की उत्तरपुस्तिका दिखाने को लेकर अभ्यर्थी मांग कर रहे थे। इनकी समस्या का समाधान करते हुए मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) ने अभ्यर्थियों को उत्तरपुस्तिका का अवलोकन करवाने का फैसला लिया है।

इस संबंध में सोमवार को अधिसूचना जारी कर दी, जिसमें आयोग ने राज्य सेवा मुख्य परीक्षा वर्ष 2019 से 2024 तक की वर्णनात्मक (डिस्क्रिप्टिव) मूल्यांकित उत्तर पुस्तिकाओं को दिखाई जाने को लेकर आवेदन मंगवाए हैं। इस व्यवस्था के लागू होने के बाद अभ्यर्थी अपनी कॉपी देखकर यह समझ सकेंगे कि उन्हें किस प्रश्न में कितने अंक मिले हैं और मूल्यांकन किस प्रकार किया गया है।

चरणबद्ध तरीके से शुरू होगी प्रक्रिया, 2019 की कापियां नवंबर 2026 से उपलब्ध – उत्तर पुस्तिकाओं के अवलोकन की प्रक्रिया चरणबद्ध तरीके से शुरू की जाएगी। सबसे पहले राज्य सेवा मुख्य परीक्षा-2019 की मूल्यांकित उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन नवंबर 2026 से प्रारंभ होगा। इसके बाद वर्ष 2020, 2021, 2022, 2023 और 2024 की मुख्य परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाएं भी निर्धारित समयानुसार उपलब्ध कराई जाएंगी।

ऑनलाइन आवेदन के बाद तय होगा स्लॉट, आयोग कार्यालय में मिलेगी कॉपी – आयोग ने इस सुविधा का लाभ लेने के लिए अभ्यर्थियों को ऑनलाइन आवेदन करने के निर्देश दिए हैं। इसके बाद आयोग उत्तरपुस्तिका दिखाने के लिए समयसीमा बताएगा। इसके आधार पर अभ्यर्थी अपनी उत्तरपुस्तिका देखने के लिए आयोग कार्यालय में जा सकेंगे। आयोग के मुताबिक इस व्यवस्था से अभ्यर्थियों को मूल्यांकन प्रक्रिया को समझने का अवसर मिलेगा और वे अपनी कमियों एवं मजबूत पक्षों का बेहतर विश्लेषण कर सकेंगे। ओएसडी रवींद्र पंचभाई का कहना है कि आवेदन प्रक्रिया, शुल्क, स्लॉट बुकिंग और अन्य आवश्यक दिशा-निर्देश जल्द ही वेबसाइट पर अपलोड किए जाएंगे।

नीमच में किसान ने कलेक्टरेट में कीटनाशक पीया : न्याय न मिलने पर उठाया कदम, हालत गंभीर, इलाज जारी

नीमच । कलेक्टरेट परिसर में मंगलवार को एक दिव्यांग किसान ने जनसुनवाई के बाद कीटनाशक पी लिया। न्याय न मिलने से परेशान किसान की हालत गंभीर है और उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

कीटनाशक पीने के बाद किसान की तबीयत बिगड़ने लगी और वह उल्टी करने लगा। यह देख मौके पर मौजूद अधिकारियों और फरियादियों में हड़कंप मच गया। एसडीएम सहित अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने तुरंत किसान को अपनी निजी गाड़ी से जिला अस्पताल पहुंचाया। जानकारी के अनुसार, थाना बघाना के ग्राम चैनपुरा बामनबाड़ी निवासी दिव्यांग किसान शंकर सिंह राजपूत अपनी पुरानी शिकायत को लेकर कलेक्टरेट पहुंचे थे। वे पिछले दो साल से अधिकारियों के चक्कर काट रहे थे। शंकर सिंह ने अपनी शिकायत में बताया था कि 26 जुलाई 2024 को उनके पिता नवल सिंह के दुधारू पशुओं की मौत हो गई थी। पास के खेत मालिक गोपाल मोरवाल और फतेहलाल मेघवाल ने ट्यूबवेल चलाने के लिए विद्युत पोल से कटी केबल को लापरवाही से लोहे की कांटेदार तार फेंसिंग पर डाल दिया था।

करंट से हुई भैंस की मौत – इस कटी हुई केबल के कारण फेंसिंग के तारों में हाई वोल्टेज करंट फैल गया, जिसकी चपेट में आने से शंकर सिंह की 1 लाख 8 हजार रुपए मूल्य की मुर्रा भैंस और 65 हजार रुपए मूल्य की साहीवाल नस्ल की गाय की मौके पर ही मौत हो गई। पीड़ित शंकर सिंह का कहना है कि वे स्वयं दिव्यांग होने के कारण चलने-फिरने में असमर्थ हैं। पशुपालन ही उनके परिवार की आजीविका का एकमात्र साधन था। पशुओं की मौत के बाद से उनका परिवार गंभीर आर्थिक तंगी और भुखमरी का सामना कर रहा है।

31 जुलाई तक कराएं फसल बीमा, प्राकृतिक आपदा से नुकसान पर मिलेगा योजना का लाभ

नीमच। खरीफ वर्ष 2026 के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत अधिसूचित फसलों का बीमा कराने की अंतिम तिथि 31 जुलाई निर्धारित की गई है। जिला प्रशासन एवं कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे अंतिम समय का इंतजार किए बिना समय रहते अपनी फसलों का बीमा कराकर योजना का लाभ सुनिश्चित करें। जिला कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के निर्देशन में उप संचालक किसान कल्याण एवं कृषि विकास नगीन सिंह रावत ने बताया कि प्राकृतिक आपदा, अतिवृष्टि, सूखा अथवा अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों से फसल को होने वाले नुकसान की स्थिति में किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत आर्थिक सुरक्षा मिल सकेगी। इसके लिए निर्धारित समय सीमा के भीतर बीमा कराना आवश्यक है। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि 31 जुलाई 2026 से पहले अपनी अधिसूचित फसलों का बीमा अवश्य कराएं।

हाईटेंशन लाइन के झूलते तारों से किसान की मौत

नीमच जिले के मनासा थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम ऊंचेड में मंगलवार को एक बड़ा हादसा हो गया। खेत में कृषि कार्य कर रहे 60 वर्षीय बुजुर्ग किसान मदनलाल पाटीदार की बिजली के तारों की चपेट में आने से मौत हो गई। इस दुर्घटना में पास में चर रही एक गाय ने भी दम तोड़ दिया। परिजन और ग्रामीणों के अनुसार, खेत के पास से गुजर रही हाईटेंशन लाइन के तार काफी समय से नीचे झूल रहे थे। मंगलवार दोपहर एक झूलता हुआ तार खेत की कांटेदार फेंसिंग से छू गया, जिससे पूरी फेंसिंग में हाई वोल्टेज करंट दौड़ गया। काम के दौरान जैसे ही मदनलाल फेंसिंग के संपर्क में आए, उन्हें जोरदार करंट लगा।

ग्रामीणों ने लगाए लापरवाही के आरोप, मुआवजे की मांग – पीड़ित परिवार का आरोप है कि झूलते तारों को लेकर बिजली कंपनी को कई बार शिकायतें दी गई थीं, लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया गया। सूचना पर पहुंची मनासा थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और जांच शुरू कर दी है। ग्रामीणों ने दोषी बिजली कर्मचारियों पर सख्त कार्रवाई और पीड़ित परिवार को मुआवजा देने की मांग की है।

नीमच में नपा ने बाजार से अतिक्रमण हटाया

साईं मंदिर चौराहा से मनासा नाका तक चला अभियान, चालान भी कटे

नीमच । शहर में यातायात व्यवस्था सुधारने और मुख्य मार्गों को अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए नगर पालिका ने सोमवार को अभियान चलाया। नगर पालिका सीएमओ दुर्गा बामनिया के निर्देश पर मेसी शोरूम चौराहा, डाक बंगला रोड, मनासा नाका और भगवानपुरा चौराहे तक अतिक्रमण हटाए गए। कार्रवाई की शुरुआत मेसी शोरूम चौराहा स्थित साईं मंदिर के सामने से हुई। यहां सड़क किनारे लगे जूस सेंटर के ठेले, दुकानों के बाहर बढ़ाए गए त्रिपाल और सड़क पर रखे सामान तुरंत हटाए गए। इसके बाद टीम डाक बंगले से मनासा नाके तक पहुंची, जहां दुकानों के बाहर रखे सामान और तय सीमा से अधिक निकले टीन शेड हटाए गए। सड़क पर बाधा बन रहे ठेलों को जेसीबी की मदद से जब्त कर नगर पालिका ले जाया गया। अभियान के दौरान भगवानपुरा चौराहा से शनि मंदिर तक कई दुकानों के बाहर अत्यधिक टीन शेड फैले पाए गए। नपा अधिकारियों ने बताया कि इन दुकानदारों को पहले दो बार नोटिस जारी कर अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए गए थे, लेकिन उन्होंने इसका पालन नहीं किया। इस पर नगर पालिका ने कड़ा रुख अपनाते हुए दोनों तरफ के दुकानदारों के चालान बनाए और कुल 10,000 रुपए का जुर्माना वसूला। अधिकारियों ने दुकानदारों को अंतिम चेतावनी देते हुए कहा कि यदि उन्होंने स्वयं टीन शेड नहीं हटाए, तो नगर पालिका जेसीबी से उन्हें ध्वस्त कर देगी।

ग्रामीण ने कलेक्ट्रेट में खुद पर केरोसिन उड़ेला : नीमच में आत्मदाह का प्रयास

नीमच । कलेक्टर कार्यालय परिसर में मंगलवार को उस समय हड़कंप मच गया, जब रतनगढ़ क्षेत्र के ग्राम आलोरी गरवाड़ा निवासी चांदमल चारण ने आत्मदाह का प्रयास किया। खुद पर केरोसिन उड़ेल चुके पीड़ित को मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने तत्परता दिखाते हुए रोक लिया, जिससे बड़ा हादसा टल गया। प्रशासनिक उपेक्षा से परेशान चांदमल विरोध दर्ज कराने के लिए गले में 11 शिकायतों से जुड़े 50 से अधिक दस्तावेजों की माला पहनकर कलेक्ट्रेट पहुंचे थे। उनका आरोप है कि ग्राम कचमारिया और आलोरी गरवाड़ा पंचायत की सरकारी जमीन पर किशनराम ने अवैध कब्जा किया है। अलोरी गरवाडा और कसमारिया गांव में दो स्थानों पर अतिक्रमण है। जिसमें अलोरी गरवाडा में स्कूल के समीप स्कूल की जगह पर पक्का कब्जा कर रखा है। इसके साथ ही कसमारिया में 80 बाय 160 की 4 दुकानें बनी हैं।

11 बार आवेदन देने के बाद भी कार्रवाई न होने से थे क्षुब्ध – पीड़ित का कहना है कि वे इस सरकारी जमीन को अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए जनसुनवाई में 11 बार आवेदन दे चुके हैं, लेकिन अधिकारियों के चक्कर काटने के बावजूद कोई सुनवाई नहीं हुई। लगातार मिल रही उपेक्षा से परेशान होकर ही उन्होंने यह आत्मघाती कदम उठाया। पीड़ित ने अवैध कब्जा तुरंत हटाने और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है। इस घटना ने प्रशासनिक जनसुनवाई की व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं ।

गो माता को 'राष्ट्र माता' घोषित करने की मांग तेज

हजारों गो सेवकों ने रैली निकालकर सरकार को सौंपा ज्ञापन

नीमच। गो सम्मान आह्वान अभियान के तहत सोमवार को शहर में गो सेवकों ने विशाल रैली निकालकर गो माता को 'राष्ट्र माता' घोषित करने और देशभर में गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की मांग उठाई। बड़ी संख्या में महिला-पुरुष गो सेवक लायंस पार्क चौराहे पर एकत्रित हुए, जहां से रैली शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए कलेक्ट्रेट पहुंची।

कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रतिनिधिमंडल ने डिप्टी कलेक्टर चंद्र सिंह धारवे को केंद्र एवं राज्य सरकार के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में गौमाता को राष्ट्रमाता का दर्जा देने, पूरे देश में गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करने तथा गो-तस्करी और गोवंश को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ कठोर कानून बनाने की मांग की गई।

गो सेवकों ने बताया कि इस अभियान के तहत पिछले कई दिनों से जन जागरूकता के लिए हस्ताक्षर अभियान भी चलाया जा रहा था। उसी क्रम में सोमवार को विशाल रैली निकालकर सरकार तक अपनी मांगें पहुंचाई गईं। रैली एवं ज्ञापन कार्यक्रम में विभिन्न गो-सेवा समितियों, सामाजिक संगठनों, हिंदू संगठनों, मातृशक्ति और बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लेकर अभियान का समर्थन किया।

गोल्ड क्रस्ट फैक्ट्री में मजदूर की मौत, पुलिस जांच में जुटी

नीमच। कैंट थाना क्षेत्र के ग्राम सगराना स्थित निर्माणाधीन गोल्ड क्रस्ट फैक्ट्री में मजदूरी करने वाले एक श्रमिक की सोमवार सुबह संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। बताया जा रहा है कि मजदूर सुबह फैक्ट्री में काम पर जाने की तैयारी कर रहा था, तभी अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई और पेट में तेज दर्द होने लगा। साथी कर्मचारियों ने बिना देर किए उसे जिला चिकित्सालय पहुंचाया, लेकिन वहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक की पहचान देवानंदराम (53) पिता छेदीराम, निवासी गोपालगंज (बिहार) के रूप में हुई है। वह पिछले कुछ समय से सगराना स्थित निर्माणाधीन गोल्ड क्रस्ट फैक्ट्री परिसर में रहकर मजदूरी कर रहा था। घटना की सूचना मिलते ही कैंट थाना पुलिस जिला अस्पताल पहुंची और शव को पीएम के लिए भिजवाया। पुलिस के अनुसार मौत के वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है।

संवाद से सशक्त होगा लोकतंत्र, हिंसा से नहीं

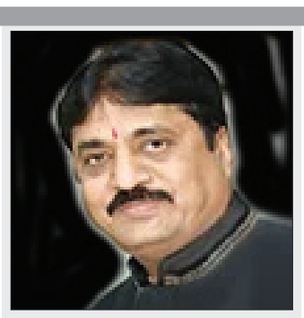

ललित गर्ग

संसद लोकतंत्र का सर्वोच्च मंदिर है। जंतर-मंतर लोकतांत्रिक विरोध का प्रतीक स्थल है। यदि इन दोनों के बीच हिंसा, तोड़फोड़ एवं अराजकता का दृश्य निर्मित होता है, तो यह केवल राजधानी की घटना नहीं रहती, बल्कि पूरे देश और विश्व के सामने भारतीय लोकतंत्र की छवि को प्रभावित करती है।

दिल्ली के जंतर-मंतर से संसद भवन तक हाल के आंदोलन के दौरान जो तनाव, टकराव और हिंसक घटनाएं देखने को मिलीं, वे केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं हैं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव, बैरिकेड तोड़ने के प्रयास, मेट्रो स्टेशन में जबरन प्रवेश की कोशिश, पुलिस द्वारा लाठीचार्ज और आंसू गैस का प्रयोग-ये सभी दृश्य उस लोकतांत्रिक संस्कृति के अनुरूप नहीं कहे जा सकते, जिसकी आधारशिला अहिंसा, संवाद और संवैधानिक मयार्दाओं पर रखी गई है। भारत आज आजादी के शताब्दी वर्ष 2047 की ओर बढ़ रहा है। यह केवल आर्थिक महाशक्ति बनने का लक्ष्य नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक परिपक्वता की कसौटी पर भी स्वयं को सिद्ध करने का अवसर है। यदि हम आज भी असहमति को हिंसा, टकराव और अराजकता के माध्यम से व्यक्त करेंगे, तो लोकतंत्र की आत्मा कमजोर होगी। लोकतंत्र की शक्ति सड़क पर शक्ति-प्रदर्शन में नहीं, बल्कि विचारों की शक्ति, संवाद की संस्कृति और संवैधानिक प्रक्रियाओं में निहित होती है।

राहुल गांधी द्वारा नीट पेपर लीक प्रकरण को लेकर चल रहे घरना-प्रदर्शन के दौरान अचानक अपने सहयोगी सांसदों के साथ प्रधानमंत्री आवास के निकट धरने पर बैठना और संसद की बजाय सड़क को राजनीतिक संघर्ष का मंच बनाना अनेक गंभीर प्रश्न खड़े करता है। जिस प्रकार इससे पहले कॉकरोच जनता पार्टी के तथाकथित छात्रों एवं कार्यकताओं ने संसद चलो मार्च के दौरान तनावपूर्ण, अराजक एवं हिंसक माहौल बनाने की घटनाएं सामने आईं, उससे यह आशंका बलवती हुई कि कुछ राजनीतिक शक्तियां भारत में भी नेपाल जैसी अराजक परिस्थितियां पैदा करने को उजावले हैं। सरकार की सतर्कता और सुरक्षा एजेंसियों की समय रहते की गई कार्रवाई से, कुछ कमियों के बावजूद, इस बड़े संकट को टाल दिया गया, अन्यथा दिल्ली लंबे समय तक हिंसा और अशांति की चपेट में आ सकती थी। देश पहले भी नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध के दौरान शाहीन बाग में लगभग सौ दिनों तक एक प्रमुख सड़क के अवरुद्ध रहने और उससे आम नागरिकों को हुई भारी कठिनाइयों का अनुभव कर चुका है। लोकतंत्र में असहमति और विरोध का अधिकार निर्विवाद है, लेकिन उसका स्थान संसद, संवाद और संवैधानिक संस्थाएं हैं, न कि सड़क पर टकराव और अराजकता। विपक्ष यदि बार-बार ऐसे आंदोलनों को प्रोत्साहित करता है, तो यह प्रश्न स्वाभाविक है कि उसका उद्देश्य लोकतांत्रिक विमर्श को मजबूत करना है या राजनीतिक ध्रूवीकरण और अस्थिरता को बढ़ावा देना।

जनता अपेक्षा करती है कि सभी दल संसद को सर्वोच्च मंच मानते हुए वहीं जवाबदेही सुनिश्चित करें।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा शांतिपूर्ण और निरस्त्र सभा करने का अधिकार देता है। यह अधिकार लोकतंत्र की सबसे बड़ी पहचान है। किंतु प्रत्येक अधिकार के साथ कर्तव्य और मयार्दा भी जुड़ी होती है। प्रदर्शन करना लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाना, पुलिस से टकराव करना, हिंसा फैलाना अथवा आम नागरिकों के जीवन को बाधित करना किसी भी दृष्टि से लोकतांत्रिक आचरण नहीं कहा जा सकता। यदि आंदोलन अपनी नैतिक शक्ति खो देता है, तो उसकी मांगें भी समाज की सहानुभूति खो बैठती हैं। यह भी उतना ही सत्य है कि लोकतंत्र केवल जनता के लिए नहीं, बल्कि सरकार के लिए भी उत्तरदायित्व का नाम है। सरकार को भी आंदोलनों को केवल कानून-व्यवस्था की समस्या मानकर नहीं देखना चाहिए। जब भी किसी वर्ग, विशेषकर युवाओं और छात्रों में असंतोष उत्पन्न हो, तो उसका समय रहते समाधान खोजने का प्रयास होना चाहिए। संवाद के दरवाजे जितनी जल्दी खुलेंगे, टकराव की संभावनाएं उतनी ही कम होंगी। लोकतंत्र में सरकार की सबसे बड़ी शक्ति उसका धैर्य, संवेदनशीलता और संवाद की इच्छा होती है। इतिहास साक्षी है कि भारत के अधिकांश सफल जनआंदोलन अहिंसा और संवाद की शक्ति से ही सफल हुए हैं। महात्मा गांधी ने विश्व को यह संदेश दिया कि सत्य और अहिंसा सबसे बड़े अस्त्र हैं। वर्ष 2011 का अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन भी इसका उदाहरण है। लाखों लोग सड़कों पर उतरे, लेकिन आंदोलन का नैतिक बल उसकी शांति और अनुशासन में था। उसी कारण सरकार को संवाद का रास्ता अपनाना पड़ा और पूरे देश में एक सकारात्मक बहस प्रारंभ हुई। इसके विपरीत जहां-जहां आंदोलनों ने हिंसा का मार्ग अपनाया, वहां उनका मूल उद्देश्य पीछे छूट गया और चर्चा केवल हिंसा तक सीमित होकर रह गई। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आखिर ऐसी कौन-सी शक्तियां हैं, जो सामान्य और भोली-भाली जनता एवं देश के युवाओं को हिंसा की ओर धकेल देती हैं? कौन-से तत्व आंदोलनों की दिशा बदलकर उन्हें अराजकता में परिवर्तित कर देते हैं? यह चिंता केवल सरकार की नहीं, पूरे समाज की होनी चाहिए। लोकतंत्र में असहमति स्वाभाविक है, लेकिन यदि असहमति के मंच पर राष्ट्रविरोधी, अराजक अथवा हिंसक तत्व सक्रिय हो जाएं, तो उन्हें नियंत्रित करना भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का अनिवार्य दायित्व बन जाता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ अराजकता की स्वतंत्रता नहीं हो सकता।

संसद लोकतंत्र का सर्वोच्च मंदिर है। जंतर-मंतर लोकतांत्रिक विरोध का प्रतीक स्थल है। यदि इन दोनों के बीच हिंसा, तोड़फोड़ एवं अराजकता का दृश्य निर्मित होता है, तो यह केवल राजधानी की घटना नहीं रहती, बल्कि पूरे देश और विश्व के सामने भारतीय लोकतंत्र की छवि को प्रभावित करती है। लोकतंत्र की गरिमा इस बात में नहीं कि कौन अधिक आक्रामक है, बल्कि इस बात में है कि कौन अधिक संयमित और उत्तरदायी है। राजनीतिक दलों को भी आत्ममंथन करना होगा। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों लोकतंत्र के दो पहिए हैं। यदि दोनों के बीच संवाद समाप्त हो जाएगा, तो लोकतंत्र टकराव का अखाड़ा बन जाएगा। विपक्ष का दायित्व केवल विरोध करना नहीं, बल्कि रचनात्मक विकल्प प्रस्तुत करना भी है। उसी प्रकार सरकार का दायित्व केवल शक्ति प्रदर्शन करना नहीं, बल्कि असहमति को सम्मानपूर्वक सुनना भी है। लोकतंत्र में किसी की पूर्ण विजय या पूर्ण पराजय नहीं होती, यहां अंततः संवाद, सहमति और समाधान ही सबसे बड़ी जीत होती है। छात्रों और युवाओं की समस्याओं का समाधान भी अत्यंत आवश्यक है। युवा किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा हैं। यदि उनकी आशाओं और अपेक्षाओं की उपेक्षा होगी, तो असंतोष स्वाभाविक रूप से बढ़ेगा। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह युवाओं से नियमित संवाद स्थापित करे, उनकी समस्याओं को समयबद्ध ढंग से सुने और समाधान की दिशा में ठोस कदम उठाए। वहीं युवाओं को भी यह समझना होगा कि हिंसा उनके आंदोलन की सबसे बड़ी शत्रु है। पत्थर और लाठी किसी समस्या का समाधान नहीं करते, वे केवल संवाद के पुलों को तोड़ते हैं। आज आवश्यकता लोकतंत्र को अधिक परिपक्व बनाने की है। हमें ऐसी राजनीतिक संस्कृति विकसित करनी होगी जिसमें विरोध हो, लेकिन वैमनस्य न हो। मतभेद हों, लेकिन मनभेद न हों। संघर्ष हो, लेकिन हिंसा न हो। लोकतंत्र में बहस जितनी प्रखर होगी, राष्ट्र उतना ही मजबूत होगा। किंतु बहस का स्थान यदि हिंसा ले लेगी, तो लोकतंत्र की आत्मा आहत होगी। जंतर-मंतर से संसद तक जो कुछ हुआ, उसे लोकतांत्रिक आदर्श नहीं कहा जा सकता। यह किसी परिपक्व राजनीतिक सोच का भी परिचायक नहीं है। राष्ट्र निर्माण का मार्ग टकराव नहीं, सहयोग है। हिंसा नहीं, सहमति है। उग्रता नहीं, उदारता है। इसलिए आवश्यक है कि सभी पक्ष अपने-अपने आग्रहों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखें।

आज देश को ऐसे नेतृत्व और ऐसी जनचेतना की आवश्यकता है जो संवाद को संघर्ष से ऊपर रखे। सरकार उदारता और संवेदनशीलता दिखाए, आंदोलनकारी संयम और अनुशासन अपनाएं तथा राजनीतिक दल अल्पकालिक लाभ के बजाय लोकतंत्र की दीर्घकालिक मजबूती को प्राथमिकता दें। यही भारत की लोकतांत्रिक परंपरा की वास्तविक पहचान भी है और भविष्य की आवश्यकता भी। अंततः यही कामना की जानी चाहिए कि जिन शक्तियों के कारण आंदोलनों में हिंसा और टकराव का वातावरण बनता है, उन्हें सद्बुद्धि प्राप्त हो। सभी पक्ष संवाद की मेज पर बैठें, अपनी बात तर्क, तथ्यों और संवैधानिक मयार्दाओं के साथ रखें तथा समाधान का मार्ग खोजें। लोकतंत्र की सबसे बड़ी विजय किसी पक्ष की जीत नहीं होती, बल्कि वह क्षण होता है जब विरोधी पक्ष भी एक-दूसरे की बात सुनने और समझने के लिए तैयार हो जाते हैं। यही आदर्श लोकतंत्र की पहचान है और यही विकसित भारत की सबसे मजबूत बुनियाद भी है।

संपादकीय

खतरे में दिल

अब वह धारणा निर्मूल साबित हो रही है कि हृदय रोग व्यक्ति को बुढ़ापे में ही गिरफ्त में लेता है। हाल के दिनों में चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं कि उत्तर भारत में बड़ी संख्या में युवा दिल की बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। निश्चय ही यह स्थिति इस क्षेत्र में बीमारियों के बदलते पैटर्न की एक चिंताजनक तस्वीर पेश करती है। दरअसल, पंजाब व हरियाणा के युवाओं के बाबत आई हालिया रिपोर्ट ने इस गंभीर संकट की हकीकत को उजागर किया है। रिपोर्ट बताती है कि पंजाब के युवाओं को दिल के बेहतर इलाज की जरूरत लगातार बढ़ रही है। दूसरी तरफ हरियाणा में बढ़ते टेली-ईसीजी नेटवर्क ने यह दशार्या है कि शुरूआती चरण में रोग का पता चलने से कैसे अधिक से अधिक जानें बचायी जा सकती हैं। निश्चय ही ये स्थितियां बताती हैं कि उत्तर भारत में बढ़ती इस चुनौती के मुकाबले के लिये तुरंत गंभीर प्रयासों की जरूरत है। दरअसल, हृदय रोग के इस संकट के मूल में हमारी जीवनशैली में आ रहे बदलावों की बड़ी भूमिका है। जिसमें शारीरिक सक्रियता में आई लगातार कमी का भी बड़ा रोल है। वहीं कसरत व खेल गतिविधियों में कमी, प्रोसेस्ड भोजन का अधिक सेवन, तंबाकू व नशीले पदार्थों की लत, व्यक्ति के जीवन में लंबे समय तक रहने वाला तनाव, पर्याप्त नींद न लेना और कम उम्र में ही मधुमेह व उच्च रक्तचाप जैसी समस्याओं से मिलकर एक गंभीर स्थिति उत्पन्न हो जाती है। आज बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की है जो लंबी सिटिंग में पढ़ाई करते हैं, कार्यस्थल पर लगातार काम करते हैं व स्क्रीन पर लगातार घंटों बिताते हैं। वे शारीरिक सक्रियता, कसरत,योग व मनोरंजन के लिये बहुत कम समय दे पाते हैं। वहीं पढ़ाई का दबाव, बेरोजगारी का तनाव और आर्थिक अनिश्चितता के कारण होने वाला मानसिक तनाव दिल की बीमारियों के खतरे को और अधिक बढ़ा देता है। लेकिन आम लोग इस तनाव व उच्च रक्तचाप आदि को गंभीरता से नहीं लेते। विडंबना यह है कि हम उन तमाम शुरूआती संकेतों को नजरअंदाज कर देते हैं, जो दिल की बीमारियों की आहट देते हैं। इन लक्षणों में शामिल सांस का फूलना, अत्यधिक थकान व सीने का दर्द तक की अनदेखी कर दी जाती है। समाज में आज भी यह धारणा बनी हुई है कि दिल की बीमारी तो बुजुर्गों का रोग होता है। सही मायने में आज समाज में उपचार से पहले व्यापक जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। ऐसे में अस्पतालों के जरिये पब्लिक हेल्थ सिस्टम को इसमें बड़ी भूमिका निभानी चाहिए।

चिंतन-मनन

उपयोगी हल

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था।एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली।

उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बबार्दी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

सीआरपीएफ के 88वें स्थापना दिवस पर बच्चों ने रंगों से उकेरी देशभक्ति, पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

नीमच। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 88वें स्थापना दिवस के अवसर पर आरसीडब्ल्यूए, आरटीसी नीमच द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वृक्षारोपण कार्यक्रम तथा 'कलर ऑफ करेज' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आरटीसी परिसर के बच्चों सहित जिले के विभिन्न विद्यालयों के 100 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों ने अपनी आकर्षक चित्रकृतियों के माध्यम से देशभक्ति, साहस, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक मूल्यों को रंगों में जीवंत रूप दिया। प्रतियोगिता में विभिन्न आयु वर्ग के विजेताओं को सम्मानित किया गया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर आरसीडब्ल्यूए, आरटीसी नीमच की अध्यक्ष श्रीमती अनीता सिंह ने सभी को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसे आयोजन बच्चों में देशप्रेम, सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित करने का प्रभावी माध्यम हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत 'हरित भारत' की संकल्पना को साकार करने के लिए आरटीसी परिसर में सैकड़ों पौधे लगाए गए। अधिकारियों, पदाधिकारियों एवं परिवारजनों ने पौधों के संरक्षण का संकल्प लेकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। इस दौरान ऋतु यादव, कर्मजीत, पिंकी, वर्षा सहित आरसीडब्ल्यूए के पदाधिकारी, परिवारजन एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। आयोजन ने बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा, देशभक्ति और पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक संदेश देकर सभी का मन मोह लिया।

विजिया मित्र मंडल की 25वीं रजत जयंती कावड़ यात्रा 16 अगस्त को

नीमच। सावन माह के पवित्र अवसर पर शहर की प्रमुख धार्मिक परंपरा का केंद्र बन चुकी विजिया मित्र मंडल की 25वीं भव्य रजत जयंती कावड़ यात्रा इस वर्ष भी अपार श्रद्धा, उत्साह और भक्तिभाव के साथ निकाली जाएगी। यह आयोजन 16 अगस्त, रविवार को सुबह 8:00 बजे बावड़ी वाले बालाजी मंदिर से प्रारंभ होगा। बीते 25 वर्षों से अविरल जारी यह यात्रा क्षेत्र में आस्था और सामाजिक समरसता की एक अनूठी मिसाल बन चुकी है।

सर्वश्रेष्ठ 5 कावड़ लाने वाले श्रद्धालुओं का होगा सम्मान – यात्रा संयोजक सुनील चौरड़िया एवं दिनेश पड़रिया ने जानकारी देते हुए बताया कि मंडल द्वारा शिवभक्तों के लिए कावड़ की विशेष व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही, आयोजन को और अधिक भव्य व प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए एक विशेष पहल की गई है—जो भी श्रद्धालु अपने घर से सुंदर और कलात्मक कावड़ लाएंगे, उनमें से सर्वश्रेष्ठ 5 कावड़ों का चयन कर संबंधित श्रद्धालुओं को मंडल द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा।

डीजे, ढोल-नगाड़ों और झांकियों के साथ गूंजेगा 'हर-हर महादेव' – पारंपरिक वेशभूषा में सजे हजारों कावड़िया हाथों में जल लेकर बावड़ी वाले बालाजी से नीलकंठ महादेव धाम के लिए प्रस्थान करेंगे। यात्रा में शामिल आकर्षक झांकियां, ढोल-नगाड़े, बैंड-बाजे और गूंजते भक्ति संगीत पूरे मार्ग को शिवमय बनाएंगे। यात्रा के दौरान अनुशासन, सेवा और धार्मिक गरिमा का विशेष ध्यान रखा जाएगा, जिसके लिए मंडल के सदस्यों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

जगह-जगह होगी पुष्पवर्षा, लगेगें सेवा स्टॉल – शिवभक्तों के स्वागत के लिए नीमच शहर के विभिन्न सामाजिक, धार्मिक संगठनों और आम नागरिकों द्वारा मार्ग में जगह-जगह पेयजल, फलाहार, फल और महाप्रसाद के स्टॉल लगाए जाएंगे। वर्षों से मिल रहा यह जनसहयोग और अपार स्नेह इस कावड़ यात्रा की सबसे बड़ी पहचान बन चुका है।

सनातन संस्कृति और सामाजिक एकता का संदेश – मंडल सदस्यों ने बताया कि यह आयोजन केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि समाज में एकता, सेवा, संस्कार और सनातन संस्कृति के संरक्षण का सशक्त माध्यम है। इसमें युवा, महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग सभी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। विजिया मित्र मंडल ने समस्त नगरवासियों एवं क्षेत्र के श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस 25वीं ऐतिहासिक कावड़ यात्रा में शामिल होकर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करें और यात्रा को अनुशासित व सफल बनाएं।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2026 के लिए आवेदन शुरू

प्रतिभाशाली बच्चों से 31 जुलाई तक ऑनलाइन नामांकन की अपील

नीमच। महिला एवं बाल विकास विभाग ने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियां हासिल करने वाले बच्चों से प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-2026 के लिए 31 जुलाई तक ऑनलाइन आवेदन करने की अपील की है। भारत सरकार का यह प्रतिष्ठित पुरस्कार साहस, सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, खेल, कला एवं संस्कृति तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे छह प्रमुख क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को प्रदान किया जाता है।

विभाग के अनुसार, पुरस्कार के लिए वही बच्चे पात्र होंगे जिनकी आयु 31 जुलाई 2026 तक 18 वर्ष से कम हो तथा उन्होंने संबंधित क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की हो।

महिला एवं बाल विकास विभाग ने जिले के सभी संबंधित विभागों, शैक्षणिक संस्थानों, स्थानीय निकायों एवं बाल देखरेख संस्थाओं से योग्य एवं प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान कर अधिक से अधिक नामांकन सुनिश्चित करने का आग्रह किया है।

सभी आवेदन राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन स्वीकार किए जाएंगे। इच्छुक बच्चे या उनके अभिभावक 31 जुलाई 2026 तक निर्धारित समय-सीमा के भीतर पोर्टल पर आवेदन कर सकते हैं। विभाग ने यह भी निर्देश दिए हैं कि पात्र बच्चों के नामांकन एवं की गई कार्रवाई की जानकारी समय पर संचालनालय को भेजी जाए तथा इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ पूरा किया जाए।

गोपनीय स्वरूप है भगवती छिन्नमस्ता का

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात् चतुर्थ संध्याकाल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। शत्रु विजय, समूह स्तम्भन, राज्य प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष प्राप्ति के लिए छिन्नमस्ता की उपासना अमोघ है। छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

भगवती छिन्नमस्ता का स्वरूप अत्यंत ही गोपनीय है। इसे कोई अधिकारी साधक ही जान सकता है। महाविद्याओं में इनका तीसरा स्थान है। इनके प्रादुर्भाव की कथा इस प्रकार है- एक बार भगवती भवानी अपनी सहचरी जया और विजया के साथ मन्दाकिनी में स्नान करने के लिए गयीं। स्नान के बाद क्षुधाग्नि से पीड़ित होकर वे कृष्णवर्ण की हो गयीं। उस समय उनकी सहचरियों ने भी उनसे कुछ भोजन करने के लिए मांगा। देवी ने उनसे कुछ समय प्रतीक्षा करने के लिए कहा। थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद सहचरियों ने जब पुनः भोजन के लिए निवेदन किया, तब देवी ने उनसे कुछ देर और प्रतीक्षा करने के लिए कहा। इस पर सहचरियों ने देवी से विनम्र स्वर में कहा कि मां तो अपने शिशुओं को भूख लगने पर अविलम्ब भोजन प्रदान करती है। आप हमारी उपेक्षा क्यों कर रही हैं? अपने सहचरियों के मधुर वचन सुनकर कृपामयी देवी ने अपने खड्ग से अपना सिर काट दिया। कटा हुआ सिर देवी के बायें हाथ में आ गिरा और उनके कबन्ध से रक्त की तीन धाराएं प्रवाहित हुईं। वे दो धाराओं को अपनी दोनों सहचरियों की ओर प्रवाहित कर दीं, जिसे पीती हुई दोनों प्रसन्न होने लगीं और तीसरी धारा को देवी स्वयं पान करने लगीं। तभी से देवी छिन्नमस्ता के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

ऐसा विधान है कि आधी रात अर्थात् चतुर्थ संध्याकाल में छिन्नमस्ता की उपासना से साधक को सरस्वती सिद्ध हो जाती हैं। शत्रु विजय, समूह स्तम्भन, राज्य प्राप्ति और दुर्लभ मोक्ष प्राप्ति के लिए छिन्नमस्ता की उपासना अमोघ है। छिन्नमस्ता का आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छिन्न यज्ञशीर्ष की प्रतीक ये देवी श्वेतकमल पीठ पर खड़ी हैं। दिशाएं ही इनके वस्त्र हैं। इनकी नाभि में योनिचक्र है। कृष्ण (तम) और रक्त (रज) गुणों की देवियां इनकी सहचरियां हैं। ये अपना शीश काटकर भी जीवित हैं। यह अपने आप में पूर्ण अन्तर्मुखी साधना का संकेत है। विद्वानों ने इस कथा में सिद्धि की चरम सीमा का निर्देश माना है। योगशास्त्र में तीन ग्रंथियां बतायी गयी हैं, जिनके भेदन के बाद योगी को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। इन्हें ब्रम्हाग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि तथा रुद्रग्रन्थि कहा गया है। मूलाधार में ब्रम्हग्रन्थि, मणिपूर में विष्णुग्रन्थि तथा आज्ञाचक्र में रुद्रग्रन्थि का स्थान है। इन ग्रंथियों के भेदन से ही अद्वैतानन्द की प्राप्ति होती है। योगियों का ऐसा अनुभव है कि मणिपूर चक्र के नीचे की नाड़ियों में ही काम और रति का मूल है, उसी पर छिन्ना महाशक्ति आरुढ़ हैं, इसका ऊर्ध्व प्रवाह होने पर रुद्रग्रन्थि का भेदन होता है।

छिन्नमस्ता का वज्र वैरोचनी नाम शाक्तों, बौद्धों तथा जैनों में समान रूप से प्रचलित है। देवी की दोनों सहचरियां रजोगुण तथा तमोगुण की प्रतीक हैं, कमल विश्वप्रपंच है और कामरति चिदानन्द की स्थूलवृत्ति है। बृहदारण्यक की अश्वशिर विद्या, शाक्तों की हयग्रीव विद्या तथा गाणपत्यों के छिन्नशीर्ष गणपति का रहस्य भी छिन्नमस्ता से ही संबंधित है। हिरण्यकशिपु, वैरोचन आदि छिन्नमस्ता के ही उपासक थे। इसीलिये इन्हें वज्र वैरोचनीया कहा गया है। वैरोचन अग्नि को कहते हैं। अग्नि के स्थान मणिपूर में छिन्नमस्ता का ध्यान किया जाता है और वज्रानाड़ी में इनका प्रवाह होने से इन्हें वज्र वैरोचनीया कहते हैं। श्रीभैरवतन्त्र में कहा गया है कि इनकी आराधना से साधक जीवभाव से मुक्त होकर शिवभाव को प्राप्त कर लेता है।

सोमवार को ही शिव का वार क्यों कहा जाता है

पुराणशिरोमणि शिवमहापुराण के अनुसार- आरोग्यंसंपद चैव व्याधीनांशांतिरेव च। पुष्टिरायुस्तथाभोगोमृतेर्हानिर्यथाक्रमम॥

अर्थात स्वास्थ्य, संपत्ति, रोग-नाश, पुष्टि, आयु, भोग तथा मृत्यु की हानि के लिए रविवार से लेकर शनिवार तक भगवान शंकर की आराधना करनी चाहिए। सभी दिनों में शिव फलप्रद हैं। पुराणों के अनुसार सोम का अर्थ चंद्रमा होता है और चंद्रमा भगवान शंकर के शीश पर मुकुटायमान होकर अत्यन्त सुशोभित होता है। भगवान शंकर ने जैसे कुटिल, कलंकी, कामी, वक्री एवं क्षीण चंद्रमा को उसके अपराधी होते हुए भी क्षमा कर अपने शीश पर स्थान दिया वैसे ही भगवान हमें भी सिर पर नहीं तो चरणों में जगह अवश्य देंगे। यह याद दिलाने के लिए सोमवार को ही लोगों ने शिव का वार बना दिया और सोम का अर्थ सौम्य होता है। भगवान शंकर अत्यन्त शांत समाधिस्थ देवता हैं। इस सौम्य भाव को देखकर ही भक्तों ने इन्हें सोमवार का देवता मान लिया। सहजता और सरलता के कारण ही इन्हें भोलेनाथ कहा जाता है। सोम का अर्थ चंद्रमा भी होता है और चंद्रमा मन का प्रतीक है। जड़ मन को चेतनता से प्रकाशित करने वाला परमेश्वर ही है। मन की चेतनता को पकड़कर हम परमात्मा तक पहुंच सके इसलिए देवाधिदेव भूतभावन पूतपावन परमेश्वर की उपासना सोमवार को की जाती है।

जप में माला का प्रयोग क्यों होता है

आपने देखा होगा कि बहुत से लोग ध्यान करने के लिए और भगवान का नाम जपने के लिए माला का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग उंगलियों पर गिन कर भी ध्यान जप करते हैं। लेकिन शास्त्रों में माला पर जप करना अधिक शुद्ध और पुण्यदायी कहा गया है। इसके पीछे धार्मिक मान्याताओं के अलावा वैज्ञानिक कारण भी है। धार्मिक दृष्टि से देखें तो अंगिरा ऋषि के कथन पर ध्यान देना होगा। अंगिरा ऋषि के अनुसार असंख्या तु यज्जसं, तत्सर्वं निष्फलं भवेत। यानी बिना माला के संख्याहीन जप का कोई फल नहीं मिलता है। इसका कारण यह है कि, जप से पहले जप की संख्या का संकल्प लेना आवश्यक होता है। संकल्प संख्या में कम ज्यादा होने पर जप निष्फल माना जाता है। इसलिए त्रुटि रहित जप के लिए माला का प्रयोग उत्तम माना गया है। जबकि वैज्ञानिक दृष्टि से यह माना जाता है कि अंगूठे और उंगली पर माला का दबाव पड़ने से एक विद्युत तरंग उत्पन्न होती है। यह धमनी के रास्ते हृदय चक्र को प्रभावित करता है जिससे मन एकाग्र और शुद्ध होता है। तनाव और चिंता से मुक्ति मिलती है। माना जाता है कि मध्यमा उंगली का हृदय से सीधा संबंध होता है। हृदय में आत्मा का वास है इसलिए मध्यमा उंगली और उंगूठे से जप किया जाता है।

धरती पर ब्रह्माजी का निवास
पुष्कर तीर्थ

जयपुर के दक्षिण पश्चिम में स्थित अजमेर हिन्दू-मुस्लिम धर्म का संगम स्थल रहा है। अजमेर हिन्दू तीर्थ यात्रियों में उतना ही लोकप्रिय है जितना कि मुसलमानों में। अजमेर से मात्र 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पुष्कर मंदिरों और झीलों के लिए प्रसिद्ध है। अरावली पर्वत श्रृंखला का नाग पर्वत अजमेर और पुष्कर को अलग करता है। यह भगवान ब्रह्मा के एकमात्र मंदिर के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। इसे भगवान ब्रह्मा का निवास स्थान भी कहा जाता है। मन्दिर के बगल में ही एक मनोहर झील है जिसे पुष्कर झील के नाम से जाना जाता है। पुष्कर झील हिन्दुओं एक परमपावन स्थान के रूप में जानी जाती है। कार्तिक के महीने में श्रद्धालु बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर इस पवित्र झील में डुबकी लगाते हैं।

धार्मिक मान्यता

हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए पुष्कर बहुत महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। ऐसा माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार पुष्कर की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। पुष्कर हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थो में से एक है। इसका बनारस या प्रयाग की तरह ही महत्व है । बद्रीनारायण, जगन्नाथ, रामेश्वरम, द्वारका इन चार धामों की यात्रा करने वाले किसी तीर्थयात्री की यात्रा तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक वह पुष्कर के पवित्र जल में स्नान नहीं कर लेता।

पौराणिक कथा

हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अनुसार भगवान ब्रह्मा त्रिदेवों में से एक देव हैं। तीनों देवों का कार्य ,जीवन चक्र (जन्म,पालन,विनाश) के आधार पर विभाजित है। ब्रह्मा जी का कार्य जन्म देना है। ब्रह्मा जी को दाढ़ीयुक्त चार सिरों वाला ,जिसके चार हाथ हैं, के रूप में चित्रित किया गया है। ब्रह्मा जी के प्रत्येक हाथ में वेद (ज्ञान) हैं। बह्मा जी का वाहन हंस है। एक बार भगवान ब्रह्मा पवित्र उद्देश्य के लिए यज्ञ करने का निश्चय किया। यह यज्ञ वह सबसे शुभ समय पर करना चाहते थे। किन्तु उनकी पत्नी सरस्वती, जिनका यज्ञ के समय रहना अत्यावश्यक था, ने उन्हें इन्तजार करने को कहा। इससे झुंझलाकर ब्रह्मा जी ने गायत्री जो कि एक ग्वालिन थी, से विवाह कर उन्हें यज्ञ में बैठा दिया। सरस्वती जी ने जब अपने स्थान पर दूसरे को देखा तो वे क्रोध से भर गयी। उन्होंने ब्रह्मा जी को श्राप दे दिया कि पृथ्वी के लोग उन्हें भुला देंगे और कभी पूजा नहीं होगी। किन्तु अन्य देवताओं की प्रार्थना पर वो पिघल गयी और कहा कि ब्रह्मा जी केवल पुष्कर में पूजे जाएंगे। इसी कारण यहाँ के अलावा और कहीं भी ब्रह्माजी का मंदिर नहीं है।

पुष्कर का अर्थ

विद्वानों के अनुसार पुष्कर का अर्थ है ऐसा तालाब जिसका निर्माण फूल से हुआ। पद्म पुराण के अनुसार पुष्कर झील का निर्माण उस समय हुआ जब यज्ञ के स्थान को सुनिश्चित करते समय ब्रह्मा जी के हाथ से कमल का फूल पृथ्वी पर गिर पड़ा। इससे पानी की तीन बूदें पृथ्वी पर गिर गयी, जिसमें एक बूंद पुष्कर में गिर गयी। इसी बूंद से पुष्कर झील का निर्माण हुआ।

ब्रह्मा मंदिर

चमक दमक से युक्त पुष्कर कस्बा धार्मिक मिथों और विश्वासों से भरा है। यहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण ब्रह्माजी का मंदिर है। मंदिर का निर्माण संगमरमर पत्थर से हुआ है तथा इसे चाँदी के सिक्कों से सजाया गया है। इन चाँदी के सिक्कों पर दानदाता के नाम भी खुदे हुए हैं। इसके अलावा मंदिर के दीवालों पर भी दानदाताओं के नाम लिखे हैं। यहाँ मंदिर के फर्श पर एक रजत कछुआ है। ज्ञान की देवी सरस्वती के वाहन मोर के चित्र भी मंदिर की शोभा बढ़ाते हैं। यहां गायत्री देवी की एक छोटी प्रतिमा और किनारे ब्रह्माजी की चार मुखों वाली मूर्ति को चौमूर्ति कहा जाता है। इस पवित्र मंदिर का प्रवेश द्वार संगमरमर का और दरवाजे चांदी के बने हैं। यहां भगवान शिव को समर्पित एक छोटी गुफा भी बनी है।

पुष्कर झील

पुष्कर झील अपनी पवित्रता और सुंदरता के लिए पूरे विश्व में जानी जाती है। ऐसा मान्यता है कि पुष्कर झील उतना ही पुराना है जितना कि सृष्टि और तीर्थयात्रा के रूप में यह अत्यंत प्राचीन काल से ही जाना जाता है। इस झील में नहाने के लिए के लिए 52 घाट बने हुए हैं जहां दिल में गहरी धार्मिक आस्था लिए श्रद्धालु डुबकी लगाते हैं। पुष्कर समय के झंझावातों में सदैव खड़ा रहा है। यह भगवान राम के समय से लेकर अब तक बदलते इतिहास का शांत गवाह है। इसका उल्लेख चौथी शताब्दी में आये चीनी यात्री फाह्यान ने भी किया है।

पुष्कर मेला

पुष्कर मेला, ऊंट मेला के लिए जाना जाता हैं। यह भारत के सबसे बड़े मेलों में से एक है और अपनी तरह का विश्व में अकेला है। मेले के दौरान भारत के ग्रामीण क्षेत्रों से लाखों लोग अपने ऊटों और अन्य पशुओं के साथ यहाँ कई दिनों तक रहकर तीर्थयात्राओं और धार्मिक उत्सवों में अपना व्यापार करते हैं। मेले के दौरान यह छोटा कस्बा अद्भुत सांस्कृतिक छटा बिखेरने लगता है। इस समय रंग-बिरंगे कपड़े पहने श्रद्धालु, जादूगर, कलाबाज, लोक नर्तक, व्यापारी, भांड, साधू, पर्यटक यहां पहुंचते हैं। हिन्दू मान्यता के अनुसार कार्तिक महीने के अष्टमी के दिन मेला शुरू होकर पूर्णिमा के दिन तक चलता है। मेले के पहले भाग में पशुओं के व्यापार पर जोर रहता है तो दूसरे भाग में धार्मिक गतिविधियों पर जोर रहता है। इस समय श्रद्धालु पवित्र झील के जल में डुबकी लगाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस जल में स्नान करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मेले में ऊटों, पशुओं, महिलाओं के श्रृंगार के सभी सामान एक ही जगह पर बिकते हैं। हाथों से बने छोटे सामान यादगार के लिए खरीदना सबसे अच्छा होता है। ऊटों और घोड़ो की दौड़ को जनता खूब प्रोत्साहित करती है। ऊटों की दौड़ पशु प्रमियों में खूब लोकप्रिय है। प्रत्येक शाम को यहां अलग-अलग राजस्थानी लोक नृत्य और संगीत का आयोजन किया जाता है। जिसमें खूब भीड़ उमड़ती है। इस मेले का अपना जादू है जो यात्रायों के जीवन भर का अनुभव बन जाता है। मेले के दौरान शिल्पग्राम द्वारा कला और शिल्प की प्रदर्शनी लगायी जाती है।

घर-घर पहुंचीं सीएमओ

महिलाओं को सिखाया सूखा-गीला कचरा अलग रखने का तरीका, स्वच्छता अपनाने का लिया संकल्प

नीमच। शहर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने की दिशा में नगर पालिका परिषद की मुख्य नगर पालिका अधिकारी दुर्गा बामनिया सोमवार सुबह स्वयं अल्कोलाइट कॉलोनी पहुंचीं। उन्होंने महिलाओं को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 की जानकारी देते हुए घरों में सूखा और गीला कचरा अलग-अलग डस्टबिन में एकत्रित करने तथा कचरा केवल डोर-टू-डोर कचरा वाहन में ही देने के लिए जागरूक किया।

वार्ड क्रमांक-27 स्थित अल्कोलाइट कॉलोनी में आयोजित जनजागरूकता कार्यक्रम के दौरान सीएमओ श्रीमती बामनिया ने महिलाओं को बताया कि कचरा सड़क, नालियों या सार्वजनिक स्थानों पर फेंकने से गंदगी और बीमारियां फैलती हैं। उन्होंने सभी नागरिकों से स्वच्छता नियमों का पालन करते हुए कचरे का पृथक्करण करने और नगर पालिका के स्वच्छता अभियान में सक्रिय सहयोग देने की अपील की।

इस दौरान उन्होंने कचरा पृथक्करण, डोर-टू-डोर कचरा संग्रहण, गीले एवं सूखे कचरे के वैज्ञानिक प्रबंधन तथा सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर प्रतिबंध जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने सीएमओ को विश्वास दिलाया कि वे अपने घरों में सूखा और गीला कचरा अलग-अलग डस्टबिन में एकत्रित करेंगी, कचरा वाहन में ही देंगी तथा स्वच्छता संबंधी सभी नियमों का पालन करेंगी।

इस अवसर पर स्वच्छता जागरूकता अभियान से जुड़ी यूनिक वेस्ट मैनेजमेंट आईईसी की सदस्य जाईन खान भसीन, निकिता जाट, देवकिशन सहित अन्य लोग भी उपस्थित रहे।

7 अगस्त से जन विश्वास अभियान, हर शुक्रवार जनता के बीच पहुंचेंगे मुख्यमंत्री, मंत्री और अधिकारी

भोपाल। मध्यप्रदेश की डॉ. मोहन सरकार ने जन समस्याओं के त्वरित समाधान और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए 'जन विश्वास अभियान' शुरू करने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में यह अभियान 7 अगस्त से पूरे प्रदेश में शुरू होगा और हर शुक्रवार संचालित किया जाएगा। अभियान के तहत मंत्री, जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी गांवों एवं शहरी वार्डों में पहुंचकर आम जनता से सीधे संवाद करेंगे, उनकी समस्याएं सुनेंगे और सरकारी योजनाओं के जमीनी क्रियान्वयन की समीक्षा करेंगे। इसका उद्देश्य शासन को जनता के और करीब लाना तथा प्रशासनिक जवाबदेही और पारदर्शिता को मजबूत करना है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में हुए निर्णय अनुसार अब प्रत्येक शुक्रवार मंत्रालय, जिला और संभाग स्तर पर नियमित बड़ी बैठकें नहीं होंगी।

नीमच बना ट्रायथलान का चैंपियन : 9 स्वर्ण समेत 20 पदक जीतकर ओवर ऑल ट्रॉफी पर जमाया कब्जा

नीमच। तीन दिनों तक रोमांच और खेल भावना से सराबोर रही 30वीं मध्य प्रदेश स्टेट ट्रायथलान एवं एक्वाथलान चैंपियनशिप-2026 का सोमवार को भव्य समापन हुआ। नगर के प्रमुख तरण पुष्कर स्विमिंग पूल में आयोजित इस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रदेशभर से आए खिलाड़ियों ने तैराकी, साइकिलिंग और दौड़ की चुनौतीपूर्ण स्पर्धाओं में दमदार प्रदर्शन किया। मेजबान नीमच ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए 9 स्वर्ण, 6 रजत और 5 कांस्य सहित कुल 20 पदक जीतकर ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली। भोपाल उपविजेता तथा नर्मदापुरम प्रथम रनरअप रहा।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि सांसद सुधीर गुप्ता ने कहा कि खेल अनुशासन, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास करते हैं। विधायक दिलीप सिंह परिहार ने कहा कि खेलों में सफलता मेहनत, समर्पण और निरंतर अभ्यास से मिलती है तथा सरकार खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए लगातार प्रयासरत है।

पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश सकलेचा ने कहा कि क्षेत्र के खिलाड़ी तैराकी जैसे खेलों में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंच रहे हैं, जो पूरे जिले के लिए गर्व की बात है। विधायक अनिरुद्ध माधव मारू ने खिलाड़ियों को अनुशासन और समर्पण के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया। भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना खंडेलवाल ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर देती हैं, जबकि नगर पालिका अध्यक्ष स्वाति गौरव चोपड़ा ने खेलों को जीवन का अभिन्न अंग बताते हुए खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। अतिथियों ने विजेता खिलाड़ियों को मेडल, ट्रॉफी एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया तथा तकनीकी अधिकारियों और कोचों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। आयोजन को सफल बनाने में जिला प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग, नगर पालिका, लोक निर्माण विभाग एवं यातायात पुलिस का विशेष सहयोग रहा।

इन खिलाड़ियों ने जीते खिताब - एक्वाथलान जूनियर बालक वर्ग में आयुष शर्मा (नीमच) प्रथम, आरव शर्मा (नीमच) द्वितीय और पृथ्वीराज सिंह हरोड़ (रतलाम) तृतीय रहे। जूनियर बालिका वर्ग में कनक श्रीधरवाल (नीमच) ने स्वर्ण पदक जीता, जबकि अन्वी खंडूरी (भोपाल) द्वितीय और आस्था गोसाई (इंदौर) तृतीय रहीं। ट्रायथलान पुरुष वर्ग में अमन प्रजापति (भोपाल) प्रथम, सरगम बाथरे (नर्मदापुरम) द्वितीय तथा जतिन अहिरवार (विदिशा) तृतीय रहे। जूनियर बालक वर्ग में आरव शर्मा (नीमच) प्रथम, आयुष शर्मा (नीमच) द्वितीय और राजवीर तिवारी (रीवा) तृतीय रहे। जूनियर बालिका वर्ग में कनक श्रीधरवाल (नीमच) ने पहला स्थान हासिल किया, जबकि तनिष्क सिंह (भोपाल) द्वितीय और अन्वी खंडूरी (भोपाल) तृतीय रहीं।

सीआरपीएफ की जन्मस्थली नीमच में 88वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया

नीमच । केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) का 88वां स्थापना दिवस बल की जन्मस्थली नीमच स्थित ग्रुप केंद्र, सीआरपीएफ में उत्साह, गरिमा एवं देशभक्ति के वातावरण में मनाया गया। वर्ष 1939 में तत्कालीन क्राउन रिप्रेजेंटेटिव्स पुलिस के रूप में नीमच से प्रारंभ हुई सीआरपीएफ आज देश की आंतरिक सुरक्षा की सबसे सशक्त एवं विश्वसनीय बालों में अग्रणी है। समारोह का आयोजन श्रीमती नीतू डी. भट्टाचार्य, महानिरीक्षक, सीआरपीएफ, मध्य प्रदेश सेक्टर मुख्यालय, भोपाल के कुशल मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती नीतू डी. भट्टाचार्य महानिरीक्षक द्वारा शौर्य स्थल में अमर शहीदों को बल के महानिदेशक की तरफ से पुष्पचक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि देने से हुआ।

स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण अभियान के अंतर्गत ग्रुप केंद्र एवं आसपास के क्षेत्रों में अब तक 8,888 विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण किया गया। वहीं पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, सीआरपीएफ, नीमच की 88 छात्राओं ने विभिन्न गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक सहभागिता का संदेश दिया।

इस अवसर पर संयुक्त अस्पताल, सीआरपीएफ, नीमच द्वारा निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें सीआरपीएफ कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों का स्वास्थ्य परीक्षण कर विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा आवश्यक परामर्श प्रदान किया गया। भारत सरकार, गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के अनुसार विशेष कैम्पैन के द्वारा सीआरपीएफ की गौरव गाथा से संबंधित विभिन्न विषयों पर लगातार प्रतियोगिताएं जैसे चित्रकला प्रतियोगिता, लघु वीडियो, क्विज़ प्रतियोगिता इत्यादि पिछले दिनों में आयोजित की गई, जिसमें नीमच स्थित विभिन्न स्कूल के बच्चों, सभी वर्गों के आम जनता ने अपनी कलाकृतियों के माध्यम से सीआरपीएफ के प्रति सम्मान, राष्ट्रभक्ति एवं गौरवपूर्ण विरासत को प्रभावशाली ढंग से बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया जिसे mygov.in वेबसाईट पर भी अपलोड किया गया। स्थापना दिवस समारोह में ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) अनुपम शर्मा उप महानिरीक्षक सीटीसी सीआरपीएफ नीमच, श्री प्रमोद कुमार सिंह उप महानिरीक्षक आरटीसी सीआरपीएफ नीमच, परिसर में स्थित रेंज कार्यालय, ग्रुप केंद्र, संयुक्त अस्पताल, प्रथम बटालियन एवं चतुर्थ सिग्नल बटालियन के अधिकारीगण, अधीनस्थ अधिकारी तथा बड़ी संख्या में जवान उपस्थित रहे। दिनभर चले कार्यक्रमों के उपरांत सायंकाल ग्रुप केंद्र परिसर के सभी मेसों में पारंपरिक 'बड़ा खाना' का आयोजन किया गया। पूरे समारोह में अनुशासन, सेवा, समर्पण एवं राष्ट्रभक्ति की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई तथा अधिकारियों, जवानों, परिवारजनों एवं विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता से सीआरपीएफ के 88वें स्थापना दिवस का यह आयोजन अत्यंत सफल एवं यादगार सिद्ध हुआ।

RBS
GROUP OF INSTITUTION
कॉलेज केम्पस : हर्कियाखाल चौराहा, मंदसौर रोड़, नीमच (म.प्र.)
Ph. (07423) 268268-69-70, M.9425922520, 7869587202, 7694015501 7694015502
NURSING (नर्सिंग) | MGMT & COMMERC | Computer & IT | SOCIAL WORK | PHARMACY
GNM (नर्सिंग) BBA BCA MSW D. PHARMA
B.Sc. (नर्सिंग) MBA B.Sc. (cs)
M.Sc. (नर्सिंग) B.Com (plain) DCA EDUCATION
P.B. B.Sc. (नर्सिंग) B.Com. (Compu.) PGDCA D.Ed B.Ed
SC/ST/OBC वर्ग के विद्यार्थियों को शासकीय नियमानुसार छात्रवृत्ति

12th के बाद सफर जोश का मंजिल कामयाबी की
MPPSC, SSC, BANK
रेलवे, पुलिस की तैयारी कीजिए
और डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार, वाणिज्यिक कर अधिकारी,
SP, DSP, CID इंस्पेक्टर, CBN इंस्पेक्टर, असिस्टेंट कमाण्डेंट,
इन्कम टेक्स इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर,
बैंक क्लर्क, PO, मैनेजर आदि बनिये
सोनी कोचिंग क्लासेस ™
ISO 9001 : 2008 Certified
22 वर्षों का अनुभव।
1200 से अधिक छात्रों को नौकरी दिला चुके हैं।
धनीराम सगर मार्केट, गायत्री मंदिर के पास,
भागेश्वर मंदिर रोड, नीमच मो. 9300905061

RRM Group of Institution
Radhadevi Ramchandra Mangal
Group of Institutions
100% Placement | Courses Offered - | Bus Facility Available
BBA, BCA, B.Com, ITI (Electrician/Fitter), B.Sc. Plain
B.Sc Micro Biology, B.Sc. (CS), B.Sc Seed Technology
B.Sc Agriculture, B.Ed, D.Ed, MBA, MSW
Bhatkheda, Mhow-Neemuch Road, Near Neemuch By Pass
Mob. 9406837863, 9424899978, 9425328392

श्री देव वेल्डिंग वर्कस
आवश्यकता है
वर्कशॉप पर काम करने के लिए
वेल्डर, फिटर और हेल्पर
की तुरंत आवश्यकता है
संपर्क करें:
मदन माली - 9669999779
राजमल गायरी - 9926640630
पता:
स्टेशन रोड, चर्च के पास,
नयागांव-नीमच
पता: स्टेशन रोड, चर्च के पास, नयागांव-नीमच

GYANODAYA UNIVERSITY
& GROUP OF INSTITUTES
NEEMUCH (M.P.)
27,000+ Alumni | CELEBRATING 24 years
Admission Announcement 2026-27
A Leading & Premier University in the Serenity of Neemuch
Vibrant Campus Life with 9000+ Currently Enrolled Students
Highest Package ₹12.75 Lac
730 Placement Offers For Graduates of 2026 as on 5th April 2026
Average Package ₹4.75 Lac
220+ Recruitment Partners
Courses Offered
Pharmacy: D.Pharm, B.Pharm, M.Pharm
Nursing: B.Sc. Nursing, GNM Nursing, Post Basic Nur.
Management: BBA, MBA, B.Com, M.Com
Engineering: B.Tech (CSE, Elect., Mech, Civil,Fire & Safety), M.Tech (CSE/IEM/ Energy Tech)
Comp. Science: BCA, MCA, B.Sc.(CS), M.Sc.(CS), DCA/PGDCA
Paramedical: BPT, BMLT, DMLT, OT/X-Ray
Agriculture: B.Sc.(Ag), M.Sc. (Agronomy) (Horticulture)
Education: B.Ed., D.Ed., BA B.Ed.*, B.Sc. B.Ed*
Polytechnic: Electrical, Mechanical, Civil, Comp. Sci.
ITI: Electrician, Fitter, COPA
Science: B.Sc. (PCMBZ/Biotech/ Microbio/CS), M.Sc. (Maths/CS/Chemistry/ Physics/Bio.)
Social Work: BSW, MSW
Lib. Science: B.Lib., M.Lib.
Art & Humanities: BA (Plain/ Journalism & mass communication), MA (Hindi/Eng./Psyco./Sociology Political Sci./Eco./Education)
Hotel Mgmt: BHMCT, Hotel Mgmt
Hospital Mgmt: MBA in Hospital & Health Care Management
Ph.D: All Subjects
Diploma Courses: YOGA | Beauty & Wellness, Diet. & Nut. | Fitness Mgmt
For Admission & Enquiry
Gram: Kanawati, Neemuch (M.P.) Call: 9827550959, 7771001344
www.gyanodayauniversity.ac.in | www.gyanodayanmh.in

आज ही बुक करें अपना Zelo इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए
मात्र रु 45990/- रु 41,990/-
में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ
मात्र रू.41,990/- इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरु ...
INTRODUCING KNIGHT+
#BuiltToPerform
RTO मॉडल मात्र
रु 81000/- रु 76000/-*
(माइलेज 80-100 कि.मी.)
3 साल बैटरी की वारंटी के साथ
Zelo Electric Scooter
बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने,
Lic रोड़, नीमच (म.प्र.)
मो. 940742399, 8770664866

SHRI S.R. GROUP OF COLLEGES
Admission Open 2025-26
धर्मेश तिवारी Director
निरंजन (राजू) तिवारी
MBA 2 Year | B.Pharma 4Year | D.Pharma 2 Year
B.Ed. 2 Year | D.Ed./STC 2 Year | B.Sc. B.Ed. 4 Year | B.A. B.Ed. 4 Year
Singoli Road, Newad, Neemuch (M.P.) City Office : Indira Nagar, PG College Road, Neemuch (M.P.)
8817326635, 8109927774 shrisrcollege collegesr90@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।